P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संथाल परगना में धार्मिक पर्यटन – सम्भावनायें एवं समस्यायें

पूजा कुमारी
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
ति.मां. भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, भारत

आर० एन० पाण्डेय
प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
ति.मां. भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, भारत

सारांश

संथाल परगन छोटा नागपुर पठार का उत्तरी – पूर्वी विस्तार है। छोटा नागपुर पठार भूगर्भिक म्यूजियम के नाम से संबोधित किया जाता है जहाँ अनेक भव्यप्राकृतिक एवं प्राकृतिक मनोरम स्थल हैं। दूसरी तरफ संथाल परगना एक आदिवासी बहुल क्षेत्र है जिनके देवी देवता प्रकृति के प्रतीक के रूप में अधिष्ठापित माने गए है। यही कारण है कि संथाल परगना क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन की अपार सम्भावनाएँ मौजूद है। यह क्षत्र खनिज की दृष्टि से यद्यपि धनी है परन्तु यहाँ के लोग गरीब है। आधारभूत संरचनाओं जैसे रेलवे सड़क एव वायु सेवाओं एवं विद्युत आपूर्ति की नितांत कमी इस क्षेत्र में है। संथाल परगना क्षेत्र में अनेक धार्मिक स्थल विख्यात हैं। कुछ तो ऐसी धार्मिक स्थल है जिन्हें अन्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है। ऐसे स्थलों में देवघर का वैद्यनाथ धाम एवं दुमका का बासुकीनाथ धाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन दोनों के अतिरिक्त संथाल परगना में अनेक ऐसे धार्मिक स्थल हैं जिनका इतिहास बहुत पुराना है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्दश्य संथाल परगना क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन के मार्ग को प्रशस्त करने के लिए इसके विकास में आनेवाली समस्याओं की पहचान कर उनसे निपटने के उपाय सुझाना है ताकि पर्यटन के संभावनाओं का विकास किया जा सके।

मुख्य शब्द : पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, पाषाण काल, पुरातत्व।

प्रस्तावना

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। जहाँ विभिन्न धर्म एवं संप्रदाय का समावेश प्राचीन काल से रहा है। यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, जैन इत्यादि धर्मों के लोग निवास करते हैं। परंतु यहाँ हिंदू धर्म के उपासकों की संख्या सबसे अधिक है। अपनी संस्कृति और पौराणिक मान्यताओं के कारण प्राचीन युग से ही अनेक धार्मिक तथा ऐतिहासिक स्थल सदियों से आकर्षण के केंद्र रहे हैं। लाखों लोग प्रति वर्ष यात्रा हेतु भिन्न–भिन्न स्थलों पर जाते हैं। तीर्थ स्थलों पर उचित सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सदैव ही सरकार व निजी पर्यटन संघो पर दबाव रहा है। आज पर्यटन विश्व का संभवतः सबसे बड़े उद्योगो में से एक है। वैसे तो पर्यटन के अनेक रूप हैं परंतु यहाँ हमारा आशय धार्मिक पर्यटन से है तथा यह अध्ययन झारखण्ड राज्य के संथाल परगना प्रमंडल से जुड़ा है।

अध्ययन क्षत्र. थाल परगना एक अपरदित पठारी भूभाग है। इस क्षेत्र के अंतर्गत छः जिले सम्मिलित है, देवघर, दुमका, जामतारा, पाकुड़, साहेबगंज एवं गोड्डा। इसका क्षेत्रफल 13572 वर्ग किण्मीण् है। इसका अक्षांशीय विस्तार 23°40′ उत्तर से 25°18′ उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार 86°28′ पूरब से 87°57′ पूरब तक है। 2011 के जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र की कुल जनसंख्या 6969097 लाख है। संथाल परगना के उत्तर में बिहार राज्य का कटिहार जिला दक्षिण में झारखण्ड के गिरिडीह तथा धनबाद जिले अवस्थित है। इसके पूरब में मालदा एवं मुर्शिदाबाद जिले तथा पश्चिम में बिहार के भागलपुर तथा मुंगेर जिले अवस्थित है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. धार्मिक पर्यटन की संकल्पना को अध्ययन क्षेत्र के सन्दर्भ में सार्थक प्रमाणित करना।
2. संथाल परगना प्रमंडल में धार्मिक पर्यटन से जुड़ी मान्यताओं एवं तथ्यों को उजागर करनाद्य
3. अध्ययन क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन से जुड़ी समस्याओं एवं उनके विकास में बाधक अवरोधों को इंगित करनाद्य

4. धार्मिक पर्यटन से जुड़े पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए उपायों को बताना।
5. पर्यटन को पर्यटन व्यवसाय के रूप में बदलने के लिए कुछ आवश्यक सुझाव देना।

परिकल्पना

ज्ञात धार्मिक स्थलों की ओर जनसंख्या का आकर्षण अधिक होता है। धार्मिक पर्यटन क्षेत्रीय विकास का माध्यम होता है। धार्मिक स्थल एवं समीपवर्ती क्षेत्र के सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण में घनिष्ठ संबंध होता है। दूरी एवं धार्मिक पर्यटकों स्थल के बीच ऋणात्मक संबंध होता है। धार्मिक पर्यटन एवं पर्यावरण प्रदूषण के बीच धनात्मक संबंध होता है।

आकड़ों का संग्रहण एवं विधितंत्र

इस शोधपत्र में प्रयुक्त होने वाले आकड़ों की प्राप्ति मुख्य रूप से द्वितीयक स्त्रातों से की गई है। साथ ही क्षेत्र विशेष के धार्मिक स्थलों से जुड़े अधिकारियों तथा वहाँ के स्थानीय लोगों से जानकारी एकत्रित की गई है। इसके अलावा विभिन्न समाचार पत्रों का विश्लेषण किया गया है। इन्हीं संग्रहित आकड़ो के विश्लेषण द्वारा इस शोध पत्र को पूर्ण किया गया है।

तालिका . 1

संथाल परगना के धार्मिक पर्यटन स्थलों की स्थिति

जिले का नाम	धार्मिक स्थल	भौगोलिक अवस्थिति	
		(अक्षांश	देशांतर)
देवघर	बैधनाथ मंदिर, बलानंद आश्रम, युगल मंदिर, लीला मंदिर, कुण्डेशवरी मंदिर, त्रिकुटाचल आश्रम, तपोवन, सत्संग आश्रम	$24^0$03' N	$86^0$28' E
साहेबगंज	कन्हैया स्थान, रामपुर, संकरी गली, मंगल हाट, शिवगद्दी, बिन्दुधाम	$24^0$42' N	$87^0$25' E
गोड्डा	बसंतराय, माँ योगिनी का मंदिर	$24^0$30' N	$87^0$22' E
पाकुड़	देवी नगर	$24^0$30' N	$87^0$30' E
दुमका	मलूटी, बासुकीनाथ	$24^0$27' N	$87^0$25' E
जामताड़ा	-	$23^0$55' N	$86^0$08' E

संथाल परगना के धार्मिक पर्यटन स्थल

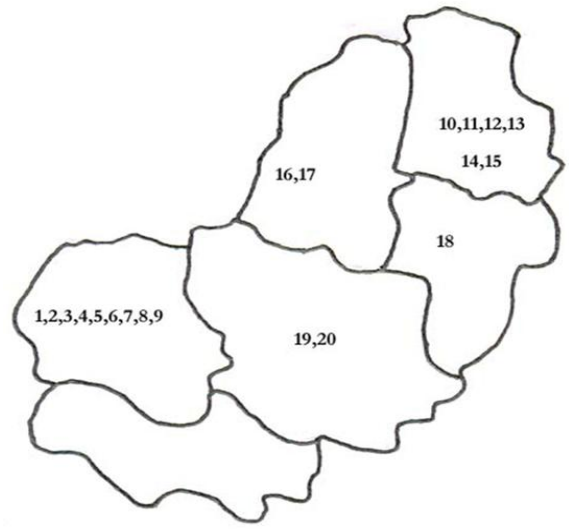

1. वैधनाथ मंदिर
2. बलानंद आश्रम
3. युगल मंदिर
4. लीला मंदिर
5. कुंडेश्वरी मंदिर
6. ण्त्रिकुटाचल आश्रम
7. तपोवन
8. सत्संग आश्रम
9. कन्हैया आश्रम
10. ण्रामपुर
11. सकरीगली
12. मंगलहाट
13. शिवगद्दी
14. बिन्दुधाम
15. बसंतराय
16. माँ योगनी मंदिर
17. देवी नगर
18. मलूटी कन्हैया स्थान
19. बासुकीनाथ
20. एरामपुरद्य

देवघर जिला के पर्यटन स्थल

वैद्यनाथ धाम दृश्य योग यह मंदिर देवघर रेलवे स्टेशन से डेढ़ किण्मीण् की दूरी पर स्थित है। इस स्थान का विशेष धार्मिक महत्व है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह शक्ति पीठ है जहाँ सती का ह्रदय गिरा था और अंतिम संस्कार भी देवघर में ही हुआ था तभी से यह स्थान चिता भूमि भी कहा जाता है।पौराणिक दृष्टिकोण से इस मंदिर का विशेष महत्व है। इस मंदिर का इतिहास त्रेता युग से जुड़ा हुआ है। यह धारना है कि इस शिवलिंग पर जल चढ़ाने से समस्त कामना पूर्ण होती है। वैद्यनाथ नाम के पीछे एक और तथ्य है कि ये वैद्यों के मालिक है और यहाँ सभी प्रकार की बोमारियों से मुक्ति

मिलती है। बैधनाथ शिव पर सुल्तानगंज की उत्तरवाहिनी गंगा से जल चढ़ाया जाता है। यहाँ बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान सहित विभिन्न राज्यों से श्रद्धालु जल चढ़ाने के आते हैं। यहाँ नेपालए श्रीलंकाए भूटान आदि देशों के भी श्रद्धालु आते हैं। इस मंदिर प्रांगण में कुल बारह मंदिर है – वैधनाथ, पार्वतीए लक्ष्मी, नारायण, तारा, काली, गणेश, सूर्य सरस्वती, रामचंद्र, देवी अन्नपूर्णा और आनंद भैरव।

तालिका 2
देवघर आने वाले घरेलु पर्यटकों की संख्या का विवरण

क्रम संख्या	राज्य	पर्यटकों की संख्या
1.	बिहार	130000
2.	झारखण्ड	75000
3.	उत्तरप्रदेश	47000
4.	राजस्थान	24000
5.	मध्यप्रदेश	11000
6.	गुजरात	8000
7.	असम	3300

स्रोत – न्यास समिति देवघरए 2014

तालिका 3
देवघर आने वाले विदेशी पर्यटकों का विवरण

क्रम संख्या	देश	आने वाले पर्यटकों की संख्या
1.	नेपाल	5200
2.	भूटान	300
3.	श्रीलंका	110
4.	बर्मा	82

शिवगंगा

शिवगंगा के निर्माण के बारे में ऐसी मान्यता है कि ये रावण के मूत्र से निर्मित हुआ है। रावण के नाभि में गंगा भगवान शिव की इच्छा से समां गई थी इसलिए इसका नाम शिवगंगा पड़ा।

बलानंद आश्रम

महाराष्ट्र के योगी श्री बालानन्द ब्रह्मचारी ने अपने जीवनकाल में इस आश्रम का निर्माण कराया थाद्य इस आश्रम में एक मंदिर है जिसमे बालेश्वर महादेव और बालेश्वरी देवी की मूर्तियाँ स्थापित है। इनका देहांत 1937 ईण् में देवघर में हुआ था।

युगल मंदिर

इसे नौलखा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह एक सुन्दर राधा कृष्ण की युगल मूर्तियों वाला मंदिर है। यहाँ एक सुन्दर बाग है। इसका समस्त खर्च श्रीमती चारुशीला देवी ने किया था।

लीला मंदिर

यह देवघर. दुमका रोड में देवघर से 5 किण्मीण् की दूरी पर अवस्थित है। मंदिर दो तल्ला है। 1921 ई० में इस मंदिर की स्थापना ठाकुर दयानंद देव ने की थी। इसी व्यक्ति ने अरुणाचल मिशन की भी स्थापना की थी। मंदिर के कक्ष में इसके निर्माता की मूर्ति स्थापित है जहाँ इनके शिष्य प्रवचन सुनते है एवं उनका गुणगान गाते है। कुण्डेश्वेरी मंदिर दृयह शक्ति और नवग्रहों का मंदिर है। यह मंदिर देवघर से 5 किण्मीण् दूर एक कुंड में स्थित है। त्रिकुटाचल आश्रम दृयह आश्रम त्रिकुट पर्वत पर देवघर से 24 किण्मीण् पूरब में स्थित है। यह आश्रम गुफा के भीतर अवस्थित है जिसमे आचार्य रहते है। इस आश्रम की व्यवस्था भी अरुणाचल मिशण के द्वारा की जाती है। अरुणाचल मिशण का उद्देश्य वैश्विक आध्यात्मिक पुनरूत्थान और विश्वशांति एवं भाईचारा की स्थापना करना है। त्रिकूट पर्वत तीन शिखरों के कारण जाना जाता है। यहाँ पार्वती का मंदिर है जिसके पास ही एक शिवलिंग भी स्थापित है। एक संत की स्मृति में यहाँ एक अन्य मंदिर है।

तपोवन

यह देवघर से 10 किण्मीण् दक्षिण.पूर्व में एक पहाड़ी पर है। यहाँ भगवान शिव का एक मंदिर है। यहाँ गुफाएँ हैं जिसमे ब्रहमचारी रहा करते है। कहा जाता है कि कभी सीता ने यहाँ तपस्या की थीद्य सत्संग आश्रम दृ श्री अनुकूलचंद्र ठाकुर के शिष्यों के द्वारा स्थापित यह सत्संग भवन एक अध्यात्मिक स्थल है। यहाँ उनके शिष्यों का एवं अन्य दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है। कहते है यहाँ आने पर मोक्षए शांति और आध्यात्मिक अनुभूति का आस्वादन मिलता है।

साहेबगंज जिले के पर्यटन स्थल

कन्हैया स्थान

राजमहल शहर से 13 किण्मीण् उत्तर. पश्चिम दिशा में गंगा के तट पर यह मंदिर स्थित है जिसमे भगवन श्री कृष्ण की मूर्ति स्थापित है। कहा जाता है चैतन्य महाप्रभु बंगाल से लौटते समय इस मंदिर में ठहरे थे तथा यहाँ उन्होंने कृष्ण का साक्षात दर्शन किया थाद्य गंगा तट के मनोरम दृश्यावलोकन का आनंद भक्तिभाव में मिश्रित होकर कुछ अलौकिक अनुभूति प्रदान करता है।

रामपुर

सँकरी गली रेलवे स्टेशन से 3 किण्मीण् उत्तर में यह गाँव स्थित हैए यहाँ 8 फीट ऊँचे टीले पर एक मुस्लिम संत की कब्र है। ऐसा कहा जाता है की इस टीले के भीतर शिव.पार्वती के मंदिर का एक भग्नावशेष है। इस कब्र के प्रवेश द्वार में ईट का द्वार तथा पत्थर के दरवाजे की आकृति उस शिव मंदिर का आभास कराता है। स्थानीय प्रचलित मान्यताओं के अनुसार इस टीले की जुताई करने वाले को यहाँ से कभी तीन फीट ऊँची एक विष्णु भगवन की मूर्तिए पाँच फनों वाले नाग से युक्त ढाई फीट का शिवलिंग जो कमल फूल के ऊपर स्थित हैए मिला है। इस पवित्र कब्रगाह से 500 फीट की दूरी पर एक मस्जिद अवस्थित हैए कहा जाता है कि इसे सम्राट अकबर ने बनवाया थाद्य सँकरी गली दृयह एक गाँव है जो पूर्वी रेलवे की लूप लाईन पर स्थित है। प्राचीन काल में यह स्थान सामरिक महत्व का थाद्य जैसा की नाम से स्पष्ट है यह स्थान राजमहल पहाड़ी और गंगा नदो के बीच एक सँकरी समतल भूमि के रूप में बंगाल के द्वार के रूप में स्थित है। यह स्थान अनेक भयानक युद्धों का

साक्षी रहा है। यहाँ नजदीक पहाड़ी पर सैयद अहमद मक्दुम की कब्र स्थित है। कहा जाता है औरंगजेब के भतीजे शाइस्ता खान ने इसे बनवाया थाद्य मंगलहाट दृयह गाँव राजमहल से 10 किण्मीण् पश्चिम में स्थित है। यह स्थान अपनी विरासतों का धनी है। यहाँ मानसिंह द्वारा निर्मित एक मंदिर और एक मस्जिद है। स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार मानसिंह ने मंदिर निर्माण की योजना बनाई थी किन्तु बात सम्राट अकबर तक पहुँची और उनकी नाराजगी के डर से उन्होंने उस योजना को मस्जिद निर्माण की ओर मोड़ दियाद्य दूसरी कथा के अनुसार मानसिंह स्वयं अपना आवास का निर्माण कर रहा थाद्य किन्तु सम्राट के नाराजगी के कारण इसे मस्जिद में रूपांतरित कर दिया गयाद्य बाद में सम्राट अकबर ने हिंदु भावना को संतुलित करने के लिए मस्जिद के पीछे एक मंदिर का निर्माण करवाया।

शिव गद्दी

यह स्थान राजमहल अनुमंडल में बढैत से 8 किण्मीण् उत्तर में स्थित है। यह स्थान 60 फीट ऊँचे टीले पर स्थित है और तीन तरफ से पहाड़ियों से घिरा हुआ है यहाँ एक शिव मंदिर है। इसे लोग गुफा मंदिर भी कहते है। यहाँ नजदीक में एक झरना है।

बिन्दुधाम

साहेबगंज जिला मुख्यालय से 55 किण्मीण् दूर माँ बिन्दुवासिनी का अति प्राचीन मनोरम दर्शनीय शक्तिपीठ हैए जहाँ सती का तीन बूंद रक्त गिरा था इसलिए इसे बिन्दुधाम शक्तिपीठ कहते है। हर वर्ष यहाँ चैत्र मास में राम नवमी पर एक पखवारा तक भव्य मेला लगता है। जामताड़ा एवं दुमका जिले के पर्यटन स्थल बासुकीनाथ. बासुकीनाथ दुमका जिला के जरमुण्डी प्रखंड मे स्थित है। इस मंदिर का इतिहास करीब डेढ़ सौ वर्ष पुराना है। इस मंदिर का निर्माण बासुकी नामक व्यक्ति ने करवाया था इसलिए इस मंदिर का नाम बासुकीनाथ पड़ा। बासुकीनाथ की कथाके अनुसार समुद्र मंथन से मंदार पर्वत को मथानी और बासुकीनाथ को रस्सी बनाया गया थाद्य मंदार पर्वत निकट ही बौंसी में स्थित है। वैधनाथ धाम आने वाले अधिकतर श्रद्धालू यहाँ आते हैं। यहाँ शिवरात्री के समय मेला लगता है। शिवरात्री के दिन बासुकीनाथ मंदिर को सजाया जाता है और शिव पार्वती के विवाहोंत्सव की झांकी निकाली जाती है। वर्ष 2015 की शुरुआत में 1 जनवरी को 92 हजार श्रद्धालु भगवान बासुकी के दर्शन के लिए आए थें।द्य इस मंदिर परिसर में कुल अट्ठारह मंदिर है बासुकीनाथए पार्वती माँए काली माँए भैरवनाथए गणेशए कार्तिकेयए तारा माँए माँ भैरवीए छिन्न्मष्तिका ए बगुला मुखीए सूर्य भगवानए विष्णुए राधेकृष्णए अन्नपूर्णाए लक्ष्मी माँए राम मंदिरए दुर्गा मंदिरए हनुमान मंदिर।

शिवगंगा

बासुकीनाथ मंदिर के प्रवेश द्वार के ठीक सामने 150 फीट की दूरी पर शिवगंगा अवस्थित हैए मंदिर में जाने से पहले यहाँ स्नान करने की परंपरा है। 20 साल पहले इस शिवगंगा का एक बार सफाई हुआ था जिसमे इसके नीचे एक शिवलिंग को देखा गया था। मलूटी. दुमका जिले के शिकारीपाड़ा अंचल में सुड़ीचुआ पहाड़ से 4 किण्मीण् आगे मलूटी एक गाँव है। यह गाँव द्वारका नदी के तट पर अवस्थित है। इस गाँव का निकटतम रेलवे स्टेशन रामपुर हाट है। इस गाँव का नाम मलूटी मौलाक्षी देवी के नाम पर पड़ा है। इस गाँव को मंदिरों का गाँव कहा जाता है। यहाँ 108 मंदिरों हैं और इतने ही तलाब भी है। इन 108 मंदिरों में मुख्य मंदिर देवी मौलाक्षी माँ का ह। यहाँ वर्ष में एक बार काली पूजा के दिन एक सौ पशुओं का वलि दी जाती है।पुरातत्व विभाग ने पुरे गाँव को पुरातात्विक प्रांगण के रूप में विकसित करने के लिए मंदिरों का सर्वेक्षण शुरू कर दिया है। यहाँ पाषाणकालीन पत्थरों के औजार और पालकालीन मूर्तियाँ मिली है। यह काफी आकर्षक पर्यटन स्थल है। इस गाँव में यह भी धारणा है कि प्रसिद्ध देवी भक्त बामा खेपाए ने यहाँ तपस्या की थी। इन मंदिरों का निर्माण राजा राखार चन्द्र के भाइयों और पुत्रों ने 1720 से 1845 के बीच करवाया थाए जिसकी न्यूनतम ऊंचाई 15 फीट और अधिकतम 60 फीट है। इस गाँव में मंदिर मस्जिद और गिरजाघर तीनों स्थित है।

1. संथाल परगना के धार्मिक पर्यटन की समस्याएँ
2. यातायात के उचित साधनों का आभाव।
3. स्तरीय होटलों तथा ठहराव स्थलों का आभाव।
4. सफाई तथा स्वच्छता की कमी।
5. पर्यटकों के लिये स्वास्थ्य सेवाओ का आभाव।
6. प्रशासनिक स्तर पर कुशल प्रबंधन की कमी।
7. पर्यटकों के लिये पर्याप्त पेयजल का आभाव।
8. पर्यटन व्यवसाय के प्रति स्थानीय निवासियो में जागरूकता की कमी।
9. संथाल परगना में धार्मिक पर्यटन के विकास हेतु आवश्यक सुझाव
10. अतिथि देवों भवः की मान्यता का आचरण।
11. यहाँ के धामिक पर्यटन स्थलों जैसे वैद्यनाथधामए बासुकीनाथधामए मलूटीए योगिनिस्थान के लिये एक सर्किट विकसित करना।
12. वैद्यनाथधाम में हवाईसेवा उपलब्ध कराना।
13. सस्ती एवं उच्च स्तरीय आवासीय खान.पान की सेवाएँ उपलब्ध कराना।
14. पर्यटकों को उचित सुरक्षा देने हेतु पुलिसिंग तथा प्रशासनिक व्यवस्ता में सुधार।
15. पर्यटकों को यात्रा परिपथ स्थानों का सम्पूर्ण विवरण देना।
16. धार्मिक पर्यटन के प्रति स्थानीय लोगो में जागरूकता लाना।

निष्कर्ष

प्रस्तुत विवेचन से यह निष्कर्ष प्राप्त किया जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन की असीम संभावनाएं मौजूद है। पवित्र वैधनाथ धामए बासुकीनाथ एवं मलूटी में माँ मौलाक्षी का मंदिर एवं अन्य धार्मिक स्थलों की उपस्थिति भारतीय पर्यटकों एवं तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करते हैं यहाँ की प्राकृतिकए आध्यात्मिकए योग शक्ति व सौन्दर्य विदेशी पर्यटकों को तीर्थ परिक्षेत्र में आने के लिए आमंत्रण देता है।परंतु यदि हम परिक्षेत्र में आने वाले कुल पर्यटकों की संख्या का सुक्ष्म अवलोकन करें तो यह तथ्य प्रकट होता है कि परिक्षेत्र में विदेशी पर्यटकों के

आगमन के वृद्धि दर आशानुरूप संख्या से कम है। जिसका मुख्या कारण परिक्षेत्र के धार्मिक स्थलों का सही प्रकार नियोजन के अनुसार विकास नहीं किया जाना है जो मुख्य रूप से विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने में प्रमुख भूमिका निर्वहन करते है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

गायत्री प्रसाद ''सांस्कृतिक भूगोल'' शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद (2002)

राजेश गोयल (2011) पर्यटन के सिद्धांत वंदना पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।

राजेश गोयल (2011) भारतीय पर्यटन उद्योगए वंदना पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।

राज बहादुर सिंह (2014) भारत के सांस्कृतिक विकास में तीर्थस्थल हरिद्वार यउत्तराखंडद्ध का योगदान।

राम कुमार तिवारी (2013) झारखण्ड की रूप रेखाए शिवांगन पब्लिकेशनए राँची।

Journal of integrated development and research, vol 4 no.1 (june 2014) p.12123.

J.M Negi 'tourism and concept and principles'k~ Gitanjali publication house, new delhi (1990) p.99